

डॉB डेव मैथ्यूसनÆ न्यू टेस्टामेंट लटिरेचरÆ व्याख्यान ČDÆ थसिसलुनीकियिनÆ टमिोथी और टाइटस © 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हलिडेब्रांट

यह न्यू टेस्टामेंट हसि्ट्री एंड लटिरेचर में डॉ. डेव मैथ्यूसन, थसिसलुनकियों, टमिोथी और टाइटस पर व्याख्यान 25 था।

ठीक है, चलए आगे बढ़ें और शुरुआत करें। आज मैं पहले और दूसरे थसिसलुनीकियों के अपने अध्ययन को समाप्त करना चाहता हूं जैसे हम सोमवार को देखना शुरू करते हैं, और फरि वास्तव में पॉल के पत्रों के संग्रह का अंतिम तीन पुस्तकों, 1 और 2 तीमुथियुस और टाइटस, और फरि चर्चा शुरू करना चाहते हैं। पॉल के संपूर्ण पत्रों के रूप में हमारी चर्चा समाप्त होती है, जो हमें शुक्रवार में ले जा सकती है। लेकिन आज कम से कम हम 1 और 2 तीमुथियुस और तीतुस को देखना शुरू करेंगे, जो, जैसा कि मैंने कहा, पॉल के पत्रों के संग्रह से संबंधित अंतिम तीन पत्र हैं जिन्हें हम देखेंगे।

और फरि हम नए नियम के अंतिम खंड की ओर बढ़ते हैं जो इब्रानियों से शुरू होता है और हमें रहस्योदघाटन की पुस्तक तक ले जाता है। लेकिन आइए प्रार्थना से शुरू करें, और फरि हम देखेंगे, थसिसलुनीकियों को समाप्त करेंगे और पॉल के पत्रों के संग्रह के अंतिम तीन पत्रों को शुरू करेंगे।

पति, हम फरि से इस बारे में सोचने और महसूस करने के लिए वनिमर हैं कि आप अपने प्राणियों के रूप में, अपनी रचना के रूप में हमसे संवाद करेंगे। और भगवान, इस वजह से, मैं प्रार्थना करता हूं कि हम आपके शब्द को ध्यान से सुनने की आवश्यकता के प्रति सचेत रहेंगे क्योंकि यह केवल एक लिखित संचार से अधिक है, बल्कि दिसतावेजों का एक संग्रह है जिसमें आपके शब्द और आपके स्वयं से कम कुछ भी नहीं है अपने लोगों के लिए रहस्योदघाटन। इसलिए, इसे सटीक रूप से समझने का प्रयास करना सभी दर्द और प्रयास और पूरे समय और कड़ी मेहनत के लायक है। और इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूं कि यह वर्ग आपके शब्द को सुनने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित होने के लिए एक छोटा सा योगदान देगा जैसा कि पहले लोगों ने सुना होगा, लेकिन जैसा कि आज आपके लोगों को इसे सुनना चाहिए। यीशु के नाम पर, हम प्रार्थना करते हैं। तथास्तु।

ठीक है, हमने 2 थसिसलुनीकियों को देखकर अपनी बात समाप्त की, जो मैंने आपको सुझाया था वह संभवतः 1 थसिसलुनीकियों के भाग में एक प्रतिक्रिया के रूप में लिखा गया था।

अर्थात्, शायद पॉल के पाठकों, थसिसलुनीकियों के पाठकों ने, 1 थसिसलुनीकियों में पॉल के पत्र पर प्रतिक्रिया दी या अधिक प्रतिक्रिया दी, और अन्य लोगों के लिए, 2 थसिसलुनीकियों में स्वयं पॉल ने एक पत्र की संभावना का उल्लेख किया है जो उसके होने का दावा करता है। लेकिन बात यह है कि, थसिसलुनकियों ने 1 थसिसलुनकियों के बाद कुछ समय तक सोचा, थसिसलुनीकियों ने तब सोचा कि वे पहले से ही प्रभु के दिन में थे। पुराने नियम से निकला एक वाक्यांश, प्रभु का दिन, 24 घंटे की अवधि को संदर्भित नहीं करता है, बल्कि प्रभु के दिन को उस समय के संदर्भ में संदर्भित करता है जब भगवान बुराई का न्याय करने और अपने लोगों को पुरस्कृत करने और बचाने के लिए लौटते हैं।

और अब थसिसलुनकियों ने सोचा कि वे पहले से ही प्रभु के दिन में थे। इसलिए, 2 थसिसलुनकियों को मुख्य रूप से उनकी उस धारणा को दूर करने के लिए लिखा गया है। और पॉल इन तीन चीजों को ओर इशारा करके ऐसा करता है जिनका हमने सोमवार को बहुत संक्षेप में उल्लेख किया था।

वह थसिसलुनकियों से कहते हैं, मूल रूप से, आप प्रभु के दिन पर नहीं हो सकते क्योंकि कुछ चीजें हैं जो प्रभु के दिन आने से पहले होनी चाहिए। और क्योंकि ये बातें अभी तक घटती नहीं हुई हैं, इसलिए तुम प्रभु के दिन में नहीं हो। 2 थसिसलुनकियों अध्याय 2 में उसने जिन तीन चीजों का उल्लेख किया है वे हैं वदिरोह, अधर्म का आदमी, और रोकनेवाला, जिसके बारे में पॉल कहता है कि वर्तमान में एक रोकनेवाला है जैसे हटा दिया जाएगा।

इसलिए, जब तक ये तीन चीजें घटती नहीं होंगी, प्रभु का दिन नहीं आएगा। और मैंने कहा कि समस्या यह है कि व्याख्या के पूरे इतिहास में हम इस बात पर आम सहमति नहीं बना पाए हैं कि ये तीन चीजें क्या हो सकती हैं। विशेषकर यह आखिरी वाला, नरोधक क्या है? और जैसा कि मैंने सोमवार को बहुत तेजी से अध्ययन किया, यह पता लगाने के लिए कई प्रयास किए गए कि अवरोधक क्या है।

कुछ लोगों ने कहा है कि यह रोमन साम्राज्य था। रोमन साम्राज्य स्वयं बुराई को रोकने वाला अवरोधक था। कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि यह स्वयं ईश्वर था।

कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि यह पवित्र आत्मा ही अवरोधक है जैसे हटा दिया जाएगा। कुछ लोगों ने कहा है कि यह चर्च है जो अवरोधक है जैसे हटा दिया जाएगा। दूसरों ने कहा है कि सुसमाचार हटा दिया जाएगा।

और अन्य सुझाव भी आए हैं जिससे हम वास्तव में निश्चिन्त नहीं हो सकते कि यह क्या था। समस्या का एक हिससा यह है, जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, दो बातें हैं जिनमें आपको ध्यान में रखना होगा। उनमें से एक यह है कि पॉल ने उन्हें ये बातें पहले ही लिखा दी हैं।

तो दुर्भाग्य से हमारे लिए, 2 थसिसलुनकियों अध्याय 2 और पद 5 में वह कहता है, क्या तुममें याद नहीं कि मैंने ये बातें तुमसे तब कही थीं जब मैं तुम्हारे साथ था? तो जाहिर तौर पर जब वह पहले अपनी मशिनरी यात्राओं में से एक पर उनके साथ मौजूद था, तो उसने निःसंदेह उन्हें इसके बारे में लिखा था। इसलिए अब उन्हें वसितार में जानें और अधिक वसितार में जाने की कोई आवश्यकता नहीं दिखती। तो संभवतः उनके पाठक जानते थे कि वह किस बारे में बात कर रहा था और वे भी अनजान थे।

तो, इसका इलाज करने का सबसे अच्छा तरीका, और वैसे, संभवतः ये तीन चीजें हैं जो पॉल के जीवनकाल में घटती हो सकती थीं और घटती हो सकती थीं। ये उस प्रकार की चीजें हैं जो पॉल के जीवनकाल में बहुत अच्छी तरह से विकसित और घटती हुई होंगी। लेकिन उनका मुख्य मुद्दा यह है कि कुछ घटनाएँ अभी तक घटती नहीं हुई हैं, इसलिए थसिसलुनकियों को यह नहीं सोचना चाहिए कि वे प्रभु के दिन पर हैं।

बाद में 2 थसिसलुनीकियों में कुछ थसिसलुनीकियों के काम न करने का संदर्भ भी दिया गया है, और कुछ अटकलें हैं कि इसे इस तथ्य से जोड़ा जा सकता है कि उन्होंने सोचा था कि क्योंकि वे पहले से ही प्रभु के दिन में थे, वे दूसरों को

धोखा देने जा रहे थे लोगों को काम करने की कोई जरूरत नहीं थी। लेकिन पॉल केवल उन्हें यह विश्वास दिलाने के लिए लिखते हैं कि जब तक ये तीन चीजें नहीं होती, चाहे वे जो भी हों और जब भी वे घटती होती हैं, तब तक प्रभु का दिन अभी तक नहीं आया है। इसलिए, थसिसलुनकियों को यह सोचकर धोखा नहीं खाना चाहिए कि वे पहले से ही अंत में, या प्रभु के दिन में जी रहे हैं।

तो हम 1 और 2 थसिसलुनकियों की तुलना कैसे करें? एक ओर, 1 थसिसलुनकियों ने थसिसलुनकियों के चर्च और ईसाइयों को स्पष्ट रूप से याद दिलाया कि यीशु मसीह वापस आ सकते हैं, और जब वह वापस आएंगे, तो वे ईसा मसीह के आगमन से जुड़ी घटनाओं में पूरी तरह से भाग लेंगे। फिर भी 2 थसिसलुनकियों ने उन्हें चेतावनी दी कि वे यह नषिकर्ष नकालने में जलदबाजी न करें कि प्रभु का दिन पहले से ही मौजूद है और पहले ही आ चुका है। तो, कैनन के भीतर, 1 और 2 थसिसलुनकियों और एक ही नए टेस्टामेंट कैनन में मसीह के आगमन पर उनके थोड़े अलग दृष्टिकोण को जोड़कर, मुझे आश्चर्य है कि क्या वे किसी अर्थ में एक दूसरे को संतुलित करने के लिए कार्य नहीं करते हैं।

इसलिए, 1 थसिसलुनकियों हमें याद दिलाता है कि मसीह हमारे जीवनकाल में वापस आ सकता है। लेकिन, क्योर्को, अध्याय 4 को फिर से पढ़ें, पॉल यहाँ तक कहता है जैसे कि यीशु उनके जीवनकाल में वापस आ सकते हैं। हम जो जीवित हैं और प्रभु के आगमन पर बचे हुए हैं, हवा में उनसे मिलने के लिए उठा लिये जायेंगे।

इसलिए, हमें ऐसे जीना होगा मानो मसीह हमारे जीवनकाल में वापस आ सकते हैं। फिर भी 2 थसिसलुनकियों हमें याद दिलाते हैं कि मसीह कुछ समय के लिए वलिंब कर सकता है। हम यह नहीं मान सकते कि वह अवश्य ही ऐसा करेगा।

तो, 1 थसिसलुनकियों, मसीह हमारे जीवनकाल में वापस आ सकते हैं। लेकिन 2 थसिसलुनकियों ने हमें याद दिलाया कि हम यह नहीं मान सकते कि वह आवश्यक रूप से ऐसा करेगा, वह देरी कर सकता है।

और मुद्दा यह है कि, किसी भी स्थिति में, परमेश्वर के लोग किसी भी स्थिति के लिए तैयार रहते हैं। मैं हमेशा यह कहानी 1 और 2 थसिसलुनकियों के बारे में बात करने के संबंध में बताता हूँ। मुझे याद है, आपको यह दिखाने के लिए कि कैसे, यदाहिम इनमें से किसी एक पर जोर देते हैं, तो हमसे गलती होने का खतरा हो सकता है।

इसलिए, उदाहरण के लिए, यदाहिम केवल 2 थसिसलुनकियों पर जोर देते हैं कि मसीह देरी कर सकता है, तो इससे एक दृष्टिकोण सामने आ सकता है, ठीक है, मैं देर-सबेर अपना जीवन व्यवस्थित कर लूंगा। मेरे पास अपना जीवन व्यवस्थित करने के लिए काफी समय है। लेकिन, पहला वाला भी, मसीह किसी भी समय वापस आ सकता था।

मैं हमेशा सोचता हूँ, मैं वास्तव में पहले खाड़ी युद्ध के दौरान, 1990 में, 90 के दशक की शुरुआत में, जब जॉर्ज बुश सीनियर राष्ट्रपति थे, एक चर्च में पादरी था। और मुझे एक समय याद है जब खाड़ी युद्ध गरम हो रहा था और मैंने एक रेडियो स्टेशन चालू किया और वहाँ एक नंबर था, एक ईसाई रेडियो स्टेशन, और एक मेज के चारों ओर कई भवषियवाणी गुरु बैठे थे, और एक प्रसिद्ध राष्ट्रीय प्रसारण ईसाई रेडियो स्टेशन. कई भवषियवाणी गुरु मेज के चारों ओर बैठे इन घटनाओं के बारे में बात कर रहे थे और वे बाइबिल की भवषियवाणी में कैसे फिट बैठते हैं।

और मुझे याद है कि उनमें से एक ने कहा था, ठीक है, हमें इसकी जरूरत है, हमें इसे एक ऐसे

समय के रूप में उपयोग करना चाहिए ताकि हम अपने पर्यासों को बढ़ावा दे सकें और अपने दोस्तों और अपने परिवार को यीशु मसीह की ओर ले जा सकें। और मैंने सोचा, ठीक है, यह अच्छी सलाह है, लेकिन यह कैसे भी होना चाहिए, चाहे कोई सोचता हो कि अंत निकट है या नहीं। फिर अगले व्यक्ति और मैं इन लोगों के दोषियों को बचाने के लिए नाम छपा देंगे, अगले व्यक्ति, जब इस व्यक्ति ने कहा तो मेरा जबड़ा खुला रह गया, और एक व्यक्ति जो काफी परसद्धि था उसने कहा, ठीक है, मुझे लगता है कि ईसाइयों को नकदी की जरूरत है उनकी सौड़ी में और उनके बैंक खाते खाली कर दें और इसे भगवान के काम में नविश करें, संभवतः उनके चर्च और उनके मंत्रालय में।

लेकिन मूलतः; उन्होंने कहा, क्योंकि यह अंत है। और दूसरा व्यक्ति सहमत हो गया, हाँ, यह अंत है। और हमें कठोर कदम उठाने की जरूरत है और आपको अपना सारा पैसा भगवान के काम में नविश करना चाहिए क्योंकि यह आर्मागडन की लड़ाई और दुनिया का अंत होने वाला है।

और वह 1990 के दशक में था। तो लगभग 20 साल या उससे अधिक बाद, मुझे वास्तव में उन लोगों पर दया आती है जिन्होंने उस सलाह को गंभीरता से लिया। लेकिन यह उस परेपिरेक्ष्य को भूल जाता है जसि हम आसानी से नहीं जान सकते।

ईसाइयों को किसी भी स्थिति के लिए तैयार रहना चाहिए। हमें ऐसे जीना चाहिए जैसे कि मसीह हमारे जीवनकाल में वापस आ सकते हैं, लेकिन हमें ऐसे भी जीना चाहिए जैसे कि विह देरी कर सकते हैं। हमें मसीह के रूप में जीना चाहिए, क्योंकि मसीह हमारे जीवनकाल में वापस आ सकते हैं, लेकिन हम जरूरी नहीं मान सकते कि वह आएंगे।

इसलिए, ईसाइयों को किसी भी स्थिति के लिए तैयार रहना चाहिए। और वास्तव में, मुझे विश्वास है कि यह संतुलन पूरे नए नियम में अपेक्षा के प्रकार के साथ-साथ देरी के रूप में पाया जाता है। और उनमें से किसी पर भी अधिक जोर देने से, मुझे लगता है कि कभी-कभी गलतफहमियाँ हो सकती हैं और वास्तव में इससे भी बदतर, मूर्खतापूर्ण कार्य करना हो सकता है, क्योंकि उम्मीद है कि 90 के दशक में किसी ने भी रेडियो पर इस व्यक्ति की सलाह को बहुत गंभीरता से नहीं लिया था।

इसलिए, मुझे लगता है कि पहले और दूसरे थिसलुनिकियों और उनके थोड़े अलग युगांतशास्त्र को एक साथ रखने से पता चलता है कि वे कैसे पूरे हैं और हमें दोनों को कैसे सुनने की जरूरत है। तो शायद जब हम यह सोचने के लिए प्रलोभित होते हैं कि हमारे पास अपना काम करने के लिए हर तरह का समय है और हम बस अपना काम करेंगे और अपने एजेंडे के अनुसार, अपने दम पर जीवन का आनंद लेंगे, तो हमें यह सुनने की जरूरत है प्रथम थिसलुनिकियों का संदेश। लेकिन जब हम मूर्खतापूर्ण कार्य करने के बारे में सोचने के लिए प्रलोभित होते हैं, जैसे कि शायद आप सभी ने कहानियाँ सुनी होंगी, मैं अब भी उन्हें कभी-कभार सुनता हूँ, ऐसे व्यक्तियों के बारे में जिन्होंने बैंक खाते या बड़े ऋण निकाल लिए हैं क्योंकि उन्हें लगा कि वे ऐसा नहीं करेंगे उन्हें वापस भुगतान करना होगा क्योंकि मसीह वापस आने वाले थे।

जब हम इस तरह के काम करने के लिए प्रलोभित होते हैं, तो हमें दूसरे थिसलुनिकियों का संदेश सुनने की जरूरत होती है। तुम्हें पता नहीं, ईसा मसीह काफी समय वलिंबाति कर सकते हैं और आपको वह ऋण या जो कुछ भी चुकाना होगा।

इसलिए, ईसाइयों को बुद्धमिनी से दोनों दृष्टिकोणों के प्रकाश में रहना चाहिए और किसी भी परदृश्य के लिए तैयार रहना चाहिए। ठीक है। पहला तीमुथियुस, अगला, वास्तव में अगली तीन पुस्तकों जनिहें हम देखने जा रहे हैं, पॉल के पत्रों के संग्रह की अंतिम तीन पुस्तकों, आप अपनी बाइबिल में देखेंगे कि फलिमोन पॉल के पत्रों के संग्रह में अंतिम पुस्तक है नया नयिम, लेकिन हमने स्पष्ट कारणों से कुलुससियों के साथ इसका निपटारा किया।

तो, अंतिम तीन पत्र जनिहें हम देखना चाहते हैं वे हैं प्रथम और द्वितीय तीमुथियुस और तीतुस। इन तीन पुस्तकों को एक साथ अकसर न्यू टेस्टामेंट के छात्रों द्वारा पादरी पत्र के रूप में संदर्भित किया जाता है। इसलिए, हमने पहले ही जेल पत्रियों, इफसियों, कुलुससियों, फलिपियों और फलिमोन नामक संग्रह को देख लिया है क्योंकि वे तब लिखे गए थे जब पॉल जेल में था, हालांकि इस बात पर कुछ बेहस है कि वह जेल में केहां था।

लेकिन इनहें अकसर देहाती पत्रों के रूप में जाना जाता है और संभवतः उनकी सामग्री के आधार पर, शायद देहाती पत्रों की तुलना में उनके लिए बेहतर नाम हैं, लेकिन शायद उनकी सामग्री के आधार पर, क्योंकि विशेष रूप से पहले टिमोथी चर्च से संबंधित कई मुद्दों को संबोधित करते हैं। वह बुजुर्गों और उपयोगकों को चुनने की बात करता है। वह चर्च की संरचना और चर्च के कार्य के बारे में कुछ हद तक बात करता है।

और अकसर तीमुथियुस, कि पॉल तीमुथियुस को यह पत्र लिख रहा है, हम उसके बारे में थोड़ा और बात करेंगे, लेकिन अकसर उसे इस चर्च के एक कामकाजी पादरी या नेता के रूप में देखा जाता है। तो इसलिए, इस कारण से, इन पत्रों को अकसर देहाती पत्रों कहा जाता है, हालांकि फरि भी, देहाती पत्रों की तुलना में उनके लिए बेहतर नाम हो सकते हैं। जैसा कि हमने कहा, मेरी राय में, नए नयिम में जसि पुस्तक को इफसियों को पत्र कहा जाने का सबसे अच्छा दावा है, वह प्रथम तीमुथियुस होगी।

याद रखें, मैंने आपको सुझाव दिया था कि इफसियों को पत्र, जसि हम संभवतः इफसियिन कहते हैं, केवल इफसिस शहर के लिए नहीं लिखा गया था। वास्तव में, इफसिस का वह वाक्यांश मूल पांडुलिपि में नहीं रहा होगा। और इफसियों की पुस्तक वास्तव में बहुत व्यापक दर्शकों को संबोधित की गई होगी, किसी विशिष्ट ईसाई समूह या चर्च और किसी विशिष्ट समस्या को संबोधित नहीं किया गया होगा।

हालांकि, पहले तीमुथियुस को स्पष्ट रूप से एक चर्च को संबोधित किया गया है, यह तीमुथियुस को संबोधित है, लेकिन तीमुथियुस को इसकी सामग्री को इफसिस शहर के एक चर्च में प्रसारित करना है। तो, मेरी राय में, फरसट टिमोथी, एक ऐसी पुस्तक है जो इफसियों को पत्र कहे जाने का सबसे अच्छा दावा कर सकती है, क्योंकि यह अंततः वहीं समाप्त होती है, इफसिस शहर में चर्च को संबोधित करते हुए। अब, बस, मैं आवश्यक रूप से इस मुद्दे को हल नहीं करना चाहता, लेकिन याद रखें, क्योंकि पॉल के पत्र बड़े पैमाने पर उनकी लंबाई के क्रम में व्यवस्थित होते हैं, जब भी हमारे पास पहला और दूसरा होता है, जैसे पहला कुरिन्थियों, दूसरा कुरिन्थियों, पहला थिसलुनीकियों, दूसरा थिसलुनीकियों, पहला तीमुथियुस, दूसरा तीमुथियुस, हम आवश्यक रूप से यह नहीं मान सकते कि यही वह क्रम है जसिमें वे लिखे गए थे।

तो, पहला और दूसरा तीमुथयुस और टाइटस वह करम है जिसमें वे नए नियम में आते हैं, लेकिन जरूरी नहीं कि जिस करम में वे लिखे गए हों। अब, मुझे लगता है कि एक बात नश्चिति है जिस पर हर कोई सहमत होगा, और वह यह है कि दूसरी तीमुथयुस आखिरी कतिब है जिस पॉल ने लिखा था, कम से कम हम इसके बारे में जानते हैं। क्योंकि जब आप इसे पढ़ते हैं, तो पॉल स्पष्ट रूप से फांसी का सामना कर रहा होता है।

वह जेल में है, और उसे एहसास होता है कि यह उसके लिए सड़क का अंत है, यह उसके जीवन का अंत है। तो, दूसरा तीमुथयुस स्पष्ट रूप से लिखी गई अंतिम पुस्तक है। प्रश्न यह है कि प्रथम तीमुथयुस और टाइटस कहाँ आते हैं? फरि से, मैं इसे हल करने की कोशिश नहीं करना चाहता, लेकिन कई लोगों ने तर्क दिया है कि टाइटस को पहले लिखा गया था, और फरि टिमोथी को दूसरा, हालांकि कुछ ने तर्क दिया है, या पहले टिमोथी को दूसरा, हालांकि कुछ ने इसके विपरीत तर्क दिया है।

लेकिन मूल रूप से आपको बस इतना जानने की जरूरत है कि नंबर एक, फरि से, कुछ हैं, जिस करम में वे घटित होते हैं जरूरी नहीं कि वह वही करम हो जिसमें वे लिखे गए थे, लेकिन दूसरी बात, एक चीज जो हम नश्चिति रूप से जानते हैं वह है दूसरा टिमोथी था लिखी गई आखिरी कतिब। पॉल स्पष्ट रूप से मृत्यु और जल्लाद अवरोध का सामना कर रहा है। तो, यह एक तरह से उनका अंतिम, अंतिम, अंतिम संचार है।

अब सबसे पहले, दूसरी बात जो पहले और दूसरे तीमुथयुस और तीतुस के साथ है, विशेष रूप से पहले तीमुथयुस और तीतुस के साथ, ये वे पत्र हैं जो अक्सर सवाल उठाया जाता है कि क्या पॉल ने उन्हें वास्तव में लिखा था या नहीं। इसका कारण यह है कि पहली शताब्दी में, वास्तव में पहली शताब्दी तक और उसके कुछ समय बाद तक, हमारे पास इस बात के प्रमाण हैं कि छिदम नाम, यानी किसी और के नाम पर लिखना, झूठे नाम के तहत लिखना, काफी आम था कुछ साहित्यिक प्रकारों और साहित्यिक शैलियों में घटना, आमतौर पर विभिन्न कारणों से एक साहित्यिक कृता का लेखक किसी और के नाम पर किसी प्रसिद्ध व्यक्तियों या प्रसिद्ध नायक के नाम पर लिखने का विकल्प चुन सकता है जो मर चुका है, शायद अपने नाम पर अधिकार जोड़ने के लिए लिखना। शायद उसने सोचा, उस व्यक्ति ने सोचा कि वह वास्तव में उस व्यक्ति की भावना से लिख रहा था जो गुजर चुका था।

सवाल है कि क्या यह भ्रामक था। दूसरे शब्दों में, क्या लोगों ने सोचा कि वे वास्तव में कुछ पढ़ रहे थे जो उस व्यक्ति ने लिखा था या क्या वे जानते थे, आप जानते हैं, पॉल ने वास्तव में यह नहीं लिखा था। हम जानते हैं कि यह कोई है जो सिर्फ उनके नाम पर लिख रहा है, इसलिए इसने उन्हें धोखा नहीं दिया होगा और लेखक उन पर तेजी से दबाव डालने की कोशिश नहीं कर रहा था और उन्हें यह सोचने में धोखा देने की कोशिश नहीं कर रहा था कि पॉल ने वास्तव में यह लिखा है।

लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि छिदम नाम, किसी और के नाम पर लिखना, विशेष रूप से किसी ऐसे व्यक्ति का नाम जो मर चुका था और जो एक नायक या एक प्रसिद्ध चरित्र था, एक काफी सामान्य साहित्यिक उपकरण था। और इसलिए, कुछ लोग यह प्रश्न उठाते हैं कि क्या नए नियम का कोई भी दस्तावेज़ संभवतः छिदमनाम वाला है? और कई लोग महसूस करते हैं कि 1 और 2 तीमुथयुस और टाइटस इसके लिए सर्वोत्तम उम्मीदवार हैं। और कुछ कारणों से।

कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि 1 तीमुथियुस और 2 तीमुथियुस और तीतुस की भाषा और शैली दे हाती पत्र हैं, वे कहेंगे जब आप इन पत्रों की तुलना उन पत्रों से करते हैं जनिहें हम जानते हैं कि पॉल ने लिखा था, रोमन, गैलाटियन जैसे पत्रों का मूल 1 और 2 कुरनिथियों, वे पत्र, फलिपिपियों जनिहें हम जानते हैं कि पॉल ने लिखा था, क्या शैली और शब्दावली जो वह उपयोग करता है वह उन पुस्तकों से इतनी भिन्न प्रतीत होती है कि पॉल ने उन्हें कैसे लिखा होगा? एक और बात यह है कि दोनों के बीच धार्मिक मतभेद प्रतीत होते हैं, फरि से देहाती पत्रों, 1 और 2 तीमुथियुस और टाइटस के बीच, और कुछ पहले के पत्रों के बीच जो हम जानते हैं कि पॉल ने लिखा था, गलाटियन, रोमन, आदि। ऐसा प्रतीत होता है कि इनमें गहरा धार्मिक मतभेद है। मतभेद. उदाहरण के लिए, पॉल के अन्य पत्रों में उभरे कुछ धार्मिक विषयों का कोई उल्लेख नहीं है, जैसे कि विश्वास द्वारा औचित्य, और कुछ प्रमुख विषय जिनके बारे में वह अपने अन्य पत्रों में बात करता है, वे नहीं होते हैं।

या फरि उनका विकास थोड़ा अलग ढंग से हो जाता है. ऐसा प्रतीत होता है कि पॉल सुसमाचार को एक सावधिजिमा, सदिधांत या शकिषा का एक नशिचति समूह मानता है जिससे वह आगे बढ़ता है, और इसलिए कुछ लोग इसे पॉल की शकिषा और उसके अन्य पत्रों में सुसमाचार पर उसके जोर से एक अलग अंतर के रूप में देखते हैं। तो ऐसे धर्मशास्त्रीय विषय प्रतीत होते हैं जो देहाती पत्रों में अनुपस्थिति हैं, या ऐसे विषय जो पॉल के कुछ अन्य पत्रों की तुलना में थोड़े अलग तरीके से विकसित होते हैं।

और इससे बहुत से लोग यह सोचने लगते हैं कि ठीक है, पॉल ने ये पत्र नहीं लिखे होंगे या नहीं लिखे होंगे। एक अंतमि, बाद में चर्च संगठन। कुछ लोग देहाती पत्रियों में काफी उच्च संगठित और संरचित चर्च देखते हैं।

और वे जो कहते हैं वह यह है, जब चर्च पहली शताब्दी में शुरू ही हो रहा था, तो यह ईसा मसीह के आने की उम्मीद के साथ रहा होगा, और जैसे-जैसे यह बढ़ रहा था, यह अधिक करशिमाई और शथिलि संरचना वाला रहा होगा। लेकिन जैसे-जैसे यह स्थिर होने लगा, और जैसे-जैसे यह बढ़ने लगा और लंबे समय तक स्थिर रहने लगा, तो इसे और अधिक सावधानी से व्यवस्थित करने की आवश्यकता थी। और इसलिए इसमें बुजुर्ग और उपयाजक और एक सावधानीपूर्वक संरचित नेतृत्व होगा।

और कुछ लोग कहते हैं कि देहाती पत्रियों में यही हो रहा है। इसलिए, देहाती पत्रियाँ बाद में आई होंगी। यह एक संरचित नेतृत्व को दर्शाता है।

यह एक चर्च संगठन और संरचना को दर्शाता है जो पॉल के जीवन के कुछ समय बाद ही सच हो गया होगा। इसलिए, पॉल यह नहीं लिख सकता था। तो, उन कारणों से, और क्योंकि किसी और के नाम पर छद्म नाम लिखना काफी आम था, कुछ लोग आश्वस्त हैं कि पॉल ने 1 और 2 तीमुथियुस और टाइटस को नहीं लिखा था या नहीं लिख सकता था।

यह संभवतः उनके किसी शिष्य द्वारा लिखा गया होगा, शायद पॉल के किसी अनुयायी द्वारा, जिसने उनकी मृत्यु के बाद अब इफिसिस की स्थिति को संबोधित करने के लिए पॉल के नाम पर लिखा है। और शायद ये बात पत्र पढ़ने वाले जानते थे. शायद उन्हें ठीक-ठीक पता था कि क्या हो रहा है।

उन्होंने सोचा भी नहीं होगा कि पॉल ने इसे लिखा है। वे जानते थे कि वह मर चुका है, और वे बस इतना जानते थे कि छद्म नाम एक सामान्य युक्त है, इसलिए हम जानते हैं कि यह पत्र शायद पॉल का कोई शिष्य या अनुयायी लिख रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ धार्मिक विषयों को

पॉल के पत्र में अन्यत्र पाए जाने वाले वषियों से भिन्न ढंग से वकिसति कथिा गया है।

और उनमें से एक चर्च संगठन होगा। तो, वे कहेंगे, आप जानते हैं, आपने 1 कुरन्थियों को पढ़ा है जहां चर्च अधिक करशिमाई है और उपहारों पर जोर देता है, जबकि अब आपके पास चर्च को संचालित करने वाला एक अधिक सावधानीपूर्वक संरचित नेतृत्व है, जो वे कहते हैं कि चर्च के असतत्व में आने के बाद यह अधिक संकेत देता है। थोड़ी देर के लिए असतत्व। या फिर, अब सुसमाचार की कल्पना अधिक की जाती है, इसकी कल्पना शकिषण के भंडार के रूप में की जाती है, शकिषा का एक अधिक अच्छी तरह से परभाषित नकिया जसिे पाल देता है।

दूसरा है देहाती पत्रियों की नैतिकता। कुछ लोग सोचते हैं कि देहाती पत्रों की नैतिकता ईश्वरीयता पर जोर देती है, वे जीवन जीने पर जोर देते हैं, जीवन को इस तरह से जीने की कोशिश करते हैं जो चर्च की शुरुआत को अब उसके शत्रुतापूर्ण, उसके बुतपरसत वातावरण में बसने की शुरुआत को दर्शाता है। इसलिए, 1 और 2 तीमुथियुस की नैतिकता चर्च को यह दिखाने की कोशिश कर रही है कि किस तरह से सद्भाव में रहना है और धर्मनरिपेक्ष दुनिया के भीतर कैसे रहना है जसिमें वे काफी समय तक रहने वाले हैं।

जबकि फिर से, धारणा यह है कि प्रारंभिक चर्च ने सोचा होगा, ठीक है, यीशु जल्द ही वापस आ रहे हैं, और इसलिए उसी के प्रकाश में जीवने जिएंगे। अब कुछ लोग सोचते हैं, नहीं, 1 और 2 तीमुथियुस का मानना है कि चर्च कुछ समय के लिए रहेगा, और अब उन्हें दिखाया जा रहा है कि हमें अपना जीवन कैसे जीना चाहिए ताकि हम एक तरह से और एक तरह से सद्भाव में रहें। इसने समाज में यथास्थिति को बहुत अधिक बिगाड़ दिया। तो, वे उस सब की ओर इशारा करेंगे और कहेंगे, यह सिर्फ 1 तीमुथियुस है जो पॉल के जीवनकाल से बहुत बाद की स्थिति को दर्शाता है।

तो फिर, पॉल, इस तथ्य के संबंध में कि छिदम नाम एक काफी सामान्य उपकरण था, फिर से, कुछ लोग कहेंगे, शायद पॉल का एक शिष्य उस तरह की बात लिख रहा है जो पॉल ने शायद कई वर्षों या उससे अधिक समय में इफिसिस के चर्च को कहा होगा पॉल की मृत्यु के बाद। और फिर, शायद पाठक परेशान नहीं हुए होंगे। उन्होंने सोचा होगा, हम जानते हैं कि पॉल मर चुका है, हम जानते हैं कि उसने यह नहीं लिखा है, हम जानते हैं कि यह उसके नाम पर एक शिष्य लिख रहा है।

इसलिए, उन्हें धोखा नहीं दिया जा रहा था, और 1 और 2 के लेखक तीमुथियुस और तीतुस को भी धोखा नहीं दिया जा रहा था। क्या आपको वह पसंद है? मेरा मतलब है, हम उस पर कैसे प्रतिक्रिया दें? यह भी एक अच्छा सवाल है कि इसे धर्मग्रंथ के रूप में क्यों स्वीकार किया गया, खासकर अगर चर्च ने सोचा कि ऐसा इसलिए है क्योंकि पॉल ने इसे लिखा है, तो हमें इसे धर्मग्रंथ के रूप में स्वीकार करना चाहिए। तो, यदि पॉल ने वास्तव में इसे नहीं लिखा तो क्या उन्हें धोखा दिया जा रहा था? यह एक बहुत अच्छी बात है, ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारंभिक चर्च के पतिओं की गवाही, उन चर्च नेताओं और उन लोगों को याद रखें जिन्होंने प्रेरितों के समय के बाद लिखा था, प्रारंभिक चर्च की गवाही यह थी कि पॉल ने उन्हें लिखा था।

मेरा मतलब है, सैद्धांतिकी रूप से, सैद्धांतिकी रूप से, मुझे कहना होगा, मुझे न्यू टेस्टामेंट में छद्म नाम से लिखने में कोई समस्या नहीं है अगर यह प्रदर्शित किया जा सके कि यह केवल एक साहित्यिक उपकरण था जिसने किसी को धोखा नहीं दिया होगा। लेकिन सवाल यह नहीं है कि क्या यह सैद्धांतिकी रूप से संभव है, बल्कि सवाल यह है कि क्या वास्तव में ऐसा हुआ है। क्या हमें इन छद्म नाम से लिखे गए लेखों के रूप में पढ़ना चाहिए जिन्हें पॉल ने नहीं बल्कि उनके बाद किसी ने लिखा? मेरा सुझाव है कि हालांकि हम शायद वैज्ञानिक परिशुद्धता के साथ 100% पूर्ण निश्चिन्ता प्राप्त नहीं कर सकते हैं, यह सोचने का अच्छा कारण है कि पॉल ने इसे लिखा था, प्रारंभिक चर्च की गवाही से शुरू करते हुए कि पॉल इन पत्रों के लेखक थे।

मेरा मतलब है, आप इन आपततयों को देखें, सबसे पहले, भाषा और शैली के साथ, हालांकि हमारे पास नए नियम में किसी भी अन्य लेखक की तुलना में पॉल द्वारा लिखी गई अधिकांश कृतियाँ हैं, फिर भी पॉल के लेखन में अभी भी यह निर्धारित करने के लिए तुलना करने के लिए पर्याप्त नहीं है कि क्या है पॉल लिख सकता था और नहीं भी लिख सकता था। दूसरे शब्दों में, यदि मैं किसी लेखक की शैली और वे किस प्रकार की शब्दावली का उपयोग करते हैं, इसकी तुलना करना चाहता हूँ, तो मुझे न्यू टेस्टामेंट की तुलना में पॉल के बहुत अधिक लेखन की आवश्यकता है। तो, वास्तव में हमारे पास नए नियम में निश्चित रूप से कहने के लिए पर्याप्त लेखन नहीं है, कि पॉल इस शैली में नहीं लिख सकता था, या पॉल कभी भी इन शब्दावली शब्दों का उपयोग नहीं कर सकता था, या वे इतने अद्वितीय हैं कि पॉल नहीं कर सकता था लिखा हुआ।

हमें यह निर्धारित करने के अलावा और भी बहुत कुछ चाहिए कि पॉल क्या लिख सकता था और क्या नहीं। तो, दिलचस्प बात यह है कि ज्यादातर लोग जो यह तर्क देते हैं कि पॉल ने इन नहीं लिखा था, वे अब शैली और शब्दावली के आधार पर ऐसा नहीं करते हैं क्योंकि वे मानते हैं कि सांख्यिकीय रूप से हमें और अधिक आश्वासन होने के लिए पॉल के बहुत सारे पत्रों की आवश्यकता है। दूसरा भी, धार्मिक मतभेद है।

फिर, यह मुझे लगता है, सबसे पहले, उन लोगों के जवाब में जो कहते हैं, ठीक है, क्योंकि 1 और 2 तीमथियुस और तीतुस के पास विश्वास द्वारा औचित्य जैसी कुछ प्रमुख शकियाँ नहीं हैं, और आप कार्यों से बचाए नहीं गए हैं कानून लेकिन यीशु मसीह में विश्वास और सुलह की भाषा के माध्यम से अनुग्रह द्वारा। कुछ धार्मिक विषय जिन्हें हमने पॉल के कुछ पत्रों में बार-बार दोहराया हुआ देखा है, तथ्य यह है कि वे 1 और 2 तीमथियुस और टाइटस में नहीं आते हैं, वास्तव में बहुत कुछ नहीं कहते हैं। मेरा मतलब है, क्या पॉल को हर समय वह सब कुछ कहना होगा जिस पर वह विश्वास करता है और सोचता है? क्या यह संभव है कि जिस स्थिति को वह संबोधित कर रहा है, उसके कारण उसने अपने पत्र को उस तरह तैयार किया जैसा उसने किया था ताकि वह शायद अन्य विषयों या अन्य विषयों पर जोर दे रहा हो, जिन्हें पर वह सामान्य रूप से जोर देता, वह इस बिंदु पर नहीं कर रहा है? ऐसे कई कारण हो सकते हैं कि वह उन ही विषयों में से कुछ पर जोर क्यों नहीं देते जो उनके पास पहले थे, और ऐसे भी कारण हो सकते हैं कि वह उन्हें अलग तरीके से विकसित कर सकते हैं।

मैं वास्तव में आश्वासन नहीं हूँ कि 1 और 2 तीमथियुस और तीतुस के बीच की दूरी, मुझे खेद है, 1 और 2 तीमथियुस और टाइटस और पॉल के अन्य पत्रों के बीच, मैं आश्वासन नहीं हूँ कि अंतर काफी बड़ा है, कि विषय इतने विकसित हो गए हैं बहुत बड़ी बात यह है कि पॉल उन्हें नहीं लिख सकता था। तो, मैं बस, फिर से, बीच वाला हूँ, मुझे लगता है, सावधानी के साथ उपयोग करने की आवश्यकता है। हम निश्चित तौर पर यह नहीं कह सकते कि, पॉल यह नहीं लिख सकता था क्योंकि वह इस पर जोर नहीं देता है या क्योंकि यह विषय इस तरह विकसित किया गया है।

मुझे लगता है कि इनके साथ सावधानी से व्यवहार करने की जरूरत है। आखिरी वाला, बाद में चर्च संगठन था। दरअसल, जब आप 1 और 2 तीमुथियुस और टाइटस को ध्यान से पढ़ते हैं, तो यह दलिचस्प है कि यह वास्तव में चर्च संगठन के बारे में कतिना कम कहता है।

पॉल की मुख्य चिंता एक उच्च संरचना और संगठित चर्च नहीं है। आपको बस पत्र को ध्यान से पढ़ना है और यह वास्तव में इस बारे में बहुत कम बताता है कि चर्च कैसे व्यवस्थित और संरचित है। वास्तव में, यदि आप पीछे जाएं, तो हम पहले ही फलिपिपियों की पुस्तक देख चुके हैं।

यह दलिचस्प है, फलिपिपियों की शुरुआत फलिपिपी के चर्च में बुजुर्गों और उपयाजकों को संबोधित करने से होती है। इसलिए, मुझे लगता है कि यह कहना अतीशयोक्ता होगी कि पहली शताब्दी की शुरुआत में प्रारंभिक चर्च कभी भी संरचित नहीं था और बाद में उसके पास कोई नेतृत्व नहीं था। ऐसा लगता है कि बहुत पहले से ही, चर्च के पास एक संरचना और एक नेतृत्व था।

और 1 और 2 तीमुथियुस और टाइटस के पास वास्तव में पॉल के पहले के कुछ पत्रों में बशिप और डीकन और एक मुख्य बुजुर्ग, एक प्रमुख बशिप और अन्य के साथ एक उच्च संगठित और संरचित चर्च के माध्यम से जो कुछ भी मिलता है, उससे अधिक कुछ नहीं लगता है। बशिप, 1 तीमुथियुस और टाइटस इसका प्रमाण नहीं देते। इसलिए दनि के अंत में, मैं यह सुझाव देने जा रहा हूँ कि अंततः ये नश्चित नहीं हैं।

हां, वे हमें याद दिलाते हैं कि शायद हम पूर्ण नश्चितता के लिए नषिकर्ष नहीं निकाल सकते जब तक कि पॉल यहां यह कहने के लिए न हो कि हां, मैंने ये लिखा है। लेकिन मुझे नहीं लगता कि शुरुआती चर्च की गवाही को पलटने के लिए पर्याप्त सबूत है कि पॉल ने ये पत्र लिखे थे। और इसलिए, मैं इस धारणा पर काम करूंगा और आगे बढ़ूंगा कि पॉल वास्तव में 1 और 2 टिमोथी और टाइटस का लेखक है।

और दोनों के बीच मतभेद उसकी परस्थितियों, जसि स्थिति को वह संबोधित कर रहा है, आदि से संबंधित होगा। तो, 1 तीमुथियुस का उद्देश्य क्या है? हम 1 तीमुथियुस से शुरुआत करेंगे। पॉलनि के लेखकत्व के बारे में मैंने जो कहा, चाहे पॉल ने उन्हें लिखा हो या नहीं, वह इन तीनों के बारे में एक तरह से सच है।

और एक तरह से उद्देश्य भी है। लेकिन अब उद्देश्य के बारे में बात करके मैं मुख्य रूप से 1 तीमुथियुस पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ। यह पत्र क्यों लिखा गया? आप 1 को कैसे पढ़ते हैं और व्याख्या करते हैं, तीमुथियुस का इस बात से बहुत संबंध है कि आप क्या सोचते हैं कि पॉल क्या कर रहा था।

सामान्य दृष्टिकोण, कुछ समय के लिए पारंपरिक दृष्टिकोण की तरह, जसि मैं चर्च मैनुअल दृष्टिकोण कहता हूँ, कि 1 टिमोथी को चर्च को चलाने के तरीके के बारे में टिमोथी के लिए एक नरिदेशात्मक मैनुअल के रूप में लिखा गया था। तो, यह उसे नरिदेश देता है कि पूजा में क्या करना है। यह उसे नरिदेश देता है कि बुजुर्गों और डीकनों को कैसे चुना जाए, अध्याय 3। यह उसे नरिदेश देता है कि चर्च में विभिन्न समूहों का प्रबंधन कैसे किया जाए, बुजुर्गों को क्या करना चाहिए और डीकनों को क्या करना चाहिए।

तो, 1 तीमुथयुस एक प्रकार का चर्च मैनुअल बन जाता है जो कि सिर्फ एक अनुदेशात्मक मैनुअल है जैसे पॉल ने तीमुथयुस को यह बताने के लिए लिखा है कि इफसिस में चर्च का प्रबंधन, प्रबंधन और देखभाल कैसे की जाए। इसलिए, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि आज हम अक्सर कुछ चर्च सरकारों का समर्थन करने या उन्हें उचित ठहराने के लिए 1 तीमुथयुस से अपील करते हैं, चाहे वह सामूहिक प्रकार की सरकार हो, चर्च सरकार का एक बुजुर्ग नियम प्रकार, या प्रेसबिटेरियन या एपिस्कोपल प्रकार की चर्च सरकार 1 तीमुथयुस अक्सर उसका समर्थन करने की अपील की जाती है। या जब यह बात आती है कि हम अपने चर्च में बुजुर्गों और उपयाजकों को कैसे चुनते हैं, तो उन्हें क्या करना चाहिए? खैर, हम 1 तीमुथयुस पर वापस जाते हैं और हमें ऐसी जानकारी मिलती है जो हमें इस प्रकार के प्रश्नों को समझने में मदद करती है।

और मैं यह नहीं कहना चाहता कि हमें ऐसा नहीं करना चाहिए, लेकिन मैं आम धारणा के अलावा कुछ और प्रस्ताव देना चाहता हूँ कि 1 टिमोथी एक चर्च मैनुअल की तरह है, चर्च को चलाने के तरीके पर एक निर्देशात्मक मैनुअल है। कुंजी ठीक 1 तीमुथयुस की शुरुआत में आती है। मैं अभी भी 2 थिससलुनिकियों पर हूँ।

यहाँ हैं हम। यह 1 तीमुथयुस की आयत 3 और 4 है। पॉल कहते हैं, मैं आपसे आग्रह करता हूँ, तीमुथयुस, इसीलिए पुस्तक का नाम तीमुथयुस है क्योंकि वह प्राथमिकी प्राप्त करता है।

पौलुस कहता है, हे तीमुथयुस, मैं तुझ से आग्रह करता हूँ, जैसा कि मैं ने तब किया था जब मैं मकादिनिया जा रहा था, कि इफसिस में ही रहें। तो स्पष्ट रूप से पॉल तीमुथयुस को लिख रहा है और उसे इफसिस में रहने के लिए कह रहा है ताकि आप कुछ लोगों को निर्देश दे सकें कि वे एक अलग या झूठी शक्ति न दें और खुद को मथिकों और अंतहीन वंशावली में व्यस्त न रखें जो दविय प्रशिक्षण के बजाय अटकलों को बढ़ावा देते हैं जो कि ज्ञात है आस्था। दूसरे शब्दों में, पॉल ने जो प्राथमिकी उद्देश्य लिखा है वह वह उद्देश्य है जैसे हमने पॉल के कई पत्रों में देखा है, वह है किसी प्रकार की झूठी शक्ति का मुकाबला करना जो अब चर्च में घुसपैठ कर चुकी है और सच्चे सुसमाचार को खतरों में डाल रही है।

तो, मैं यह मानता हूँ कि जो हो रहा है वह यही है। सबसे अधिक संभावना है कि पॉल ने अपने सहकर्मियों में से एक तीमुथयुस को नियुक्त किया है, क्योंकि पॉल किसी कारण से, विभिन्न कारणों से, स्वयं वहाँ नहीं हो सका, पॉल अब तीमुथयुस को इफसिस के चर्च में जाने और इस समस्या की देखभाल करने के लिए नियुक्त करता है, अर्थात्, वह लोगों को चेतावनी देते हुए कहते हैं कि वे इस झूठे सिद्धांत या इस झूठी शक्ति को न सखिएं जो कि सुसमाचार में सच्चे प्रशिक्षण और विश्वास के माध्यम से आने वाले यीशु मसीह के सुसमाचार में सच्ची प्रगति के बजाये वंशावली आदि के बारे में अंतहीन अटकलों को बढ़ावा देती है। तो, 1 तीमुथयुस हमें यह बताने के लिए एक चर्च मैनुअल नहीं है कि चर्च कैसे करना है, यह मुख्य रूप से एक किताब है जो तीमुथयुस को बताने के लिए लिखी गई है, तीमुथयुस को यह निर्देश देने के लिए कि इफसिस के चर्च में घुसपैठ करने वाली झूठी शक्ति से कैसे निपटना है।

तो, उस अर्थ में, 1 तीमुथयुस गैलाटियन और कुलुससियों की पुस्तकों के समान श्रेणी में आता है जहाँ पॉल किसी प्रकार की वचिलति शक्ति या झूठी शक्ति को संबोधित कर रहा है जो अब यीशु मसीह के सुसमाचार के लिए खतरा है। और इसलिए, मैं यह मानता हूँ कि 1 तीमुथयुस में पॉल जो करने जा रहा है वह प्राथमिकी रूप से नहीं है, मुझे कहना चाहिए, मुख्य रूप से तीमुथयुस को यह बताना है कि सुसमाचार कैसे चलाना है, बल्कि उसे निर्देश देना है कि इस झूठी शक्ति से कैसे निपटना है जो इफसिस के चर्च में घुसपैठ कर रही है. और इसलिए, वह टिमोथी को उस चर्च में जाने और इस समस्या का समाधान करने के लिए नियुक्त करता है।

तो, और दूसरी बात, जब आप 1 तीमुथियुस को पढ़ते हैं, तो स्पष्ट रूप से तीमुथियुस एक प्रकार का मध्यस्थ व्यक्ति है। पॉल तीमुथियुस को लिख रहा है, लेकिन वह निर्देश नहीं दे रहा है, मुख्य रूप से तीमुथियुस को निर्देश दे रहा है, वह तीमुथियुस को निर्देश दे रहा है जैसे इफसिस के चर्च को दिया जाना चाहिए। तो, तीमुथियुस के माध्यम से इफसियन चर्च के लिए पॉल का लेखन।

अंततः वे ही हैं जिन्हें इफसिस के चर्च, 1 तीमुथियुस के अधिकांश निर्देशों का पालन करना है। लेकिन तीमुथियुस एक तरह से मध्यस्थ है, जैसे इस जानकारी में मध्यस्थता करनी है। इसलिए, पॉल तीमुथियुस को संबोधित करता है क्योंकि तीमुथियुस इफसियन चर्च का प्रभारी है, और तीमुथियुस को इस जानकारी को इफसियन चर्च को बताना है।

तो, इसका मतलब यह है कि 1 तीमुथियुस की कतिब, मुझे लगता है, मोटे तौर पर ऐसी ही दिखती है। फिर जब हम 1 तीमुथियुस के उद्देश्य को समझते हैं, तो क्या पॉल तीमुथियुस को निर्देश दे रहा है कि इस झूठी शक्ति का मुकाबला कैसे किया जाए जसिने इफसिस में चर्च में घुसपैठ की है, 1 तीमुथियुस, मुझे लगता है, मोटे तौर पर प्रत्येक अध्याय में, प्रत्येक प्रमुख में देखा जा सकता है अनुभाग को उन विभिन्न तरीकों के रूप में देखा जा सकता है जिन्हें टिमोथी को इस झूठी शक्ति से निपटने और मुकाबला करने के लिए लागू करना चाहिए। तो, सबसे पहले, तीमुथियुस और इफसियन चर्च के लिए झूठी शक्ति का मुकाबला करने का पहला तरीका भगवान की कृपा के सुसमाचार पर जोर देना है।

दलितस्प बात यह है कि 1 तीमुथियुस के पहले अध्याय में, पॉल वास्तव में खुद को किसी ऐसे व्यक्ति के उदाहरण के रूप में उपयोग करता है जैसे भगवान की कृपा से बचाया गया है या पकड़ लिया गया है और जैसे उसकी पछिली स्थिति से बाहर निकाला गया है और अब उसके काम के माध्यम से बचाया और बचाया गया है। यीशु मसीह। इसलिए, झूठी शक्ति का मुकाबला करने का पहला तरीका ईश्वर की कृपा के सुसमाचार पर जोर देना है। दूसरा तरीका, और फिर, ये विभाजन बिल्कुल कठिन हैं, अध्याय 1, अध्याय 2, लेकिन झूठी शक्ति का मुकाबला करने का दूसरा तरीका उचित चर्च व्यवस्था का पालन करना है।

सबसे अधिक संभावना है, झूठी शक्ति जो कर रही थी उसका एक हिसा चर्च में अराजकता और व्यवधान पैदा कर रहा था क्योंकि यह पूजा के लिए इकट्ठा हुआ था, जसिसे वे बहुत परेशान करने वाले और पूरी तरह से अपरंपरागत तरीके से काम कर रहे थे। इसलिए, पॉल ने चर्च से प्रार्थना के लिए इकट्ठा होते समय उचित व्यवस्था बहाल करने का आह्वान किया। और ये बहुत महत्वपूर्ण है।

हम एक क्षण में इस पर वापस लौटेंगे। लेकिन अध्याय 2 का पूरा संदर्भ चर्च को संबोधित कर रहा है क्योंकि यह पूजा के लिए इकट्ठा होता है, न कि किसी अपने घरों में या नज्दी तौर पर क्या करते हैं या कार्यस्थल पर क्या होता है, बल्कि अध्याय 2 का पूरा संदर्भ चर्च को संबोधित करता है क्योंकि यह पूजा के लिए इकट्ठा होता है। झूठी शक्ति का मुकाबला करने का तीसरा तरीका योग्य चर्च नेताओं को चुनना है।

यह वह खंड है जहां पॉल बुजुर्गों और उपयाजकों को चुनने के बारे में बात करता है। हम थोड़ी देर में इसके बारे में थोड़ी और बात करेंगे और देखेंगे कि कनेक्शन क्या है। अध्याय 4, भविष्यवक्ता को चर्च में विभिन्न समूहों के साथ उचित व्यवहार बहाल करने के लिए प्रोत्साहित करके।

इसलिए, अध्याय 4 में, पॉल वभिनिन समूहों, वधिवाओं और वे बड़ों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, और चर्च में युवा व्यक्तियों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, को संबोधित करते हैं। तो फरि, ऐसा लगता है कि इस झूठी शक्ति ने, चाहे वह कुछ भी हो, चर्च में व्यवधान और अराजकता पैदा कर दी थी। और अब, फरि से, पॉल उन्हें यह देखने और सावधान रहने के लिए बुलाकर इसे बहाल करने की कोशिश कर रहा है कि वे चर्च के भीतर वभिनिन समूहों और वभिनिन व्यक्तियों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, जिसमें उनका नेतृत्व भी शामिल है, जो वास्तव में अध्याय 5 है। झूठी शक्ति का मुकाबला करने का आखिरी तरीका है पॉल ने तीमुथियुस से चर्च के नेताओं के साथ उचित व्यवहार को प्रोत्साहित करने के लिए कहा।

मैं इसे एक पल के लिए छोड़ दूंगा। हालाँकि मैं ऐसा करने में झिझकता हूँ क्योंकि, फरि भी, हम ऐसा नहीं करते हैं - यह हमारी पश्चिमी मानसिकता और हर चीज को एक अच्छे साउंड बाइट या एक अच्छी साफ-सुथरी थीम में समेटने की हमारी इच्छा हो सकती है जो सब कुछ समेट देती है। लेकिन ऐसा लगता है कि अगर मुझे 1 तीमुथियुस 3 का एक खंड या एक कविता चुननी हो जो प्रमुख विषय या पुस्तक के प्रमुख विषयों में से एक को समाहित कर सके, तो यह अध्याय 3, श्लोक 15 होगा, जहाँ पॉल कहता है कि अगर मैं हूँ विलंबित—मैं बैक अप लूंगा और 14 पढ़ूंगा—मुझे आशा है कि मैं जल्द ही आपके पास आऊंगा।

इसलिए, पौलुस ने तीमुथियुस से कहा, मैं वास्तव में इफसिस में किसी समय तुमसे मिलने की आशा करता हूँ, लेकिन मैं तुम्हें ये नरिदेश इसलिए लिख रहा हूँ ताकि अगर मुझे देर हो जाए, तो तुम्हें पता चल जाए कि किसी को भगवान के घर में कैसा व्यवहार करना चाहिए, जो कि है जीवित परमेश्वर का चर्च, सत्य का स्तंभ और गढ़। तो, एक अर्थ में, अध्याय 3, श्लोक 15 संक्षेप में बताता है कि पॉल इस पत्र में क्या कर रहा है। वह चाहता है कि इफसियिन ईसाई जानें कि उन्हें चर्च में भगवान के घर और सच्चाई के स्तंभ के रूप में कैसे आचरण करना चाहिए।

और ये सभी नरिदेश, मुझे लगता है, उस उद्देश्य में योगदान करते हैं। चर्च-यह इस तथ्य को भी दर्शाता है कि पहली शताब्दी में चर्च को आम तौर पर एक घर के रूप में समझा जाता था। जिस प्रकार घर में कुछ कार्य और कुछ तरीके संचालित होते थे, उसी प्रकार पॉल चाहता था कि वह चर्च में भी भगवान के घर के रूप में प्रतबिबिति हो।

और यह अध्याय 3 और श्लोक 15 में परलिक्षति होता है। अब मैं 1 तीमुथियुस में कुछ अंशों को देखना चाहता हूँ ताकि यह प्रदर्शित किया जा सके कि पृष्ठभूमि को समझने से पाठ को देखने के हमारे तरीके में कतिना अंतर आ सकता है। पहला है—मुझे याद नहीं आ रहा कि यह मेरे पास है—नहीं।

यदि कोई अभी भी लिख रहा हो तो मैं इसे वापस रखूंगा। पहला खंड जैसा मैं देखना चाहता हूँ वह अध्याय 2 का एक भाग है, और मैं इन पर बहुत अधिक समय खर्च नहीं करना चाहता, लेकिन फरि भी, कुछ पाठों को समझने की कोशिश में शामिल मुद्दों को उनके कारणों के प्रकाश में प्रदर्शित करने के लिए पर्याप्त है। हो सकता है कि पॉल ने उन्हें लिखा हो। इन अंशों में क्या चल रहा है, और वे चर्च में घुसपैठ कर चुकी झूठी शक्ति की इस समस्या की प्रतिक्रिया कैसे हो सकते हैं? यह 1 तीमुथियुस 2 के अध्याय 2 के अंतिम कई पद हैं। पौलुस कहता है, क्या कोई सोना और मोती पहनि हुए है, और क्या तू ने अपने बाल गूथे हैं? आपको ऐसा नहीं करना चाहिए।

मैंने अभी इसे पढ़ा। नहीं, हम वापस जायेंगे और उस बारे में बात करेंगे। एक महिला को पूर्ण समर्पण के साथ मौन रहकर सीखने दें।

मैं महिलाओं को किसी पुरुष को पढ़ाने या उस पर अधिकार रखने की अनुमति नहीं देता। उसे चुप रहना है। चूक पहिले आदम का नरिमाण हुआ, फरि हव्वा का।

और आदम तो धोखा नहीं खाया, परन्तु स्तरी धोखा खाकर अपराधी हो गई। फरि भी वह बच्चे पैदा करने के माध्यम से बच जाएगी, बेशरते वे वशिवास, प्रेम, पवतिरता और वनिमरता के साथ बने रहें। हम इस तरह के पाठ के साथ क्या करते हैं? फरि, हम इसे बलिकूल सीधा लेते हैं, इसलए हाँ, हम मोती और सोना नहीं पहन सकते और बाल नहीं गुंथ सकते, और महिलाओं को चुप रहना चाहिए और किसी पुरुष को नहीं सखाना चाहिए, या किसी पुरुष पर अधिकार नहीं रखना चाहिए, या बोलना नहीं चाहिए।

मुझे कुछ बातें कहने दीजिए। नंबर एक, याद रखने वाली पहली बात यह है कि आप इस पाठ को चाहे जोसि तरह से समझें, यह चर्च का संदर्भ दे रहा है क्योंकि यह पूजा के लिए इकट्ठा होता है। तो यह आवश्यक रूप से इस बारे में कुछ नहीं कह रहा है कि घर में क्या चल रहा है, या किसी के नज्जी जीवन में क्या चल रहा है, या नहीं कि उनमें रुचि नहीं है, मैं सरिफ पॉल के मुख्य फोकस को प्रदर्शति करने की कोशशि कर रहा हूँ।

यह इस बारे में बात नहीं कर रहा है कि कार्गस्थल पर क्या चल रहा है। पॉल संबोधति कर रहे हैं कि जब चर्च पूजा के लिए इकट्ठा होता है तो क्या होता है। समझने वाली दूसरी बात यह है कि, फरि से, पॉल एक झूठी शकिषा को संबोधति कर रहा है जसिने चर्च में घुसपैठ की है, और जाहरि तौर पर पूजा सेवा में समस्याएं पैदा की हैं।

तो, यह केवल कुछ अपरासंगकि शकिषण नहीं है। पॉल बस बैठ कर नहीं कहता, मैं चर्च में महिलाओं की भूमकि के बारे में पढ़ाने जा रहा हूँ। वह एक वशिषिट समस्या को संबोधति कर रहा है जो संभवतः इस झूठी शकिषा के कारण उत्पन्न हुई थी, चाहे वह कुछ भी हो, जसिने अब चर्च के भीतर व्यवधान पैदा करे दिया है।

अब, मैं कुछ और सुझाव देता हूँ। मेरी लाइब्रेरी में ब्रूस वटिर नाम के एक व्यक्तिकी एक दलिचस्प कतिब है, जो कैम्ब्रिज, इंग्लैंड के एक ब्रिटिश वदिवान हैं। उन्होंने एक दलिचस्प कतिब लिखी जसिमें उन्होंने पहली शताब्दी के साहित्यिकि साकष्यों के आधार पर तरक दिया कि रोमन दुनयिा में यह अवधारणा रही होगी कि जसिसे नई महिला या नई रोमन महिला कहा जाता है।

यह क्या था, कुछ लोग थे, हालांकि मूल रूप से जनता और सामान्य, और सम्राट, और वशिष रूप से पहली शताब्दी में उस समय के दारिशनिकों द्वारा इस पर नाराजगी जताई गई थी, हालांकि इस पर नाराजगी जताई गई थी, वे एक नए रोमन के इस वचिार की वकालत कर रहे थे महिला। वह कोई ऐसा व्यक्तिकि था जो अपनी स्वतंत्रता का दखिावा करता था। यह कोई ऐसा व्यक्तिकि था जसिने उत्तेजक कपड़े पहने थे।

मूल रूप से, उन्होंने पारंपरिकि वविाह भूमकिओं और वविाह के मूल्य का दखिावा कयिा और उसे कमतर आंका। वे पहली शताब्दी में समाज की परंपराओं और सभी पारंपरिकि भूमकिओं का दखिावा कर रहे थे। फरि, अपने धन के इस आडंबरपूर्ण प्रदर्शन को बढ़ावा देना।

फरि, उत्तेजक कपड़े पहनना, अपने जीवनसाथी और अपने पतयिों के प्रतानादर दखिाना।

क्या यह संभव है कि यह उन चीजों में से एक है जो अब इफसिस के चर्च में घुसपैठ कर चुकी है? इससे यह स्पष्ट हो जाएगा कि फिर पॉल सोना, मोती, गुंथे हुए बाल और महंगे कपड़े पहनने के खिलाफ क्यों बोलता है? जरूरी नहीं कि वे बातें अपने आप में गलत हों, लेकिन क्या यह संभव है कि यह वही बात थी जो यह नई रोमन महिला अवधारणा सुझा रही थी? इसलिए, वह उनसे कह रहा है कि ऐसा नहीं है कि ये चीजें अपने आप में गलत हैं, लेकिन इस उततेजक और अपमानजनक तरीके से कपड़े न पहनें, जैसा यह नई रोमन महिला प्रचाराति कर रही है। इसके अलावा, तब भी पॉल के निर्देश जब वह कहते हैं कि महिला को अपने पति पर अधिकार नहीं रखना चाहिए या उसे सखाना नहीं चाहिए।

तो फिर, क्या यह संभव है कि यह इस नई रोमन महिला की परंपरा का फिर से दिखावा करने, पति के प्रति अनादर दिखाने, पारंपरिक विवाह, विवाह के मूल्य और विवाह के भीतर पारंपरिक भूमिकाओं के प्रति अनादर दिखाने की प्रवृत्ति को दर्शाता है? पॉल जिस बात से परेशान है वह यह है कि अब इफसियन चर्च में घुसपैठ हो गई है और अब उनकी पूजा में महिलाओं का आना और इस तरह से कपड़े पहनना सामने आ रहा है जो इस नई रोमन महिला को दर्शाता है, जो एक तरह की जीवनशैली और दृष्टिकोण को दर्शाता है जो कुछ लोगों द्वारा नदिनीय भी था। बुतपरस्त दार्शनिक और आम तौर पर रोमन जनता। और अब पॉल चाहता है कि यह रुके।

वह नहीं चाहते कि महिलाएं इस अवधारणा की तरह एक नई रोमन महिला के रूप में काम करें जो एक तरह से विद्रोही हो और समाज की परंपराओं का दिखावा करती हो और इसके सभी पारंपरिक मूल्यों को कमजोर करती हो, उततेजक और दिखावटी कपड़े पहनती हो और अपने पतियों का अनादर करती हो, ऐसे कपड़े पहनती हो जिससे शादी का अनादर हो। आदि। और पॉल चाहता है कि यह रुके। तो हो सकता है कि पृष्ठभूमि को थोड़ा समझने से आपको यह देखने में मदद मिल सके कि पॉल ऐसा क्यों लिखता है, वह इसे इस तरह से क्यों संबोधित करता है, क्यों वह कपड़े पहनने के कुछ तरीकों को मना करता है, क्यों वह महिलाओं को चर्च में पढ़ाने से मना करता है और अपने पतियों पर अधिकार, क्योंकि यह झूठी शक्ति हो सकती है और शायद पहली शताब्दी का यह नया रोमन महिला विचार है जो अब इफसियन चर्च में घुसपैठ कर चुका है और सभी प्रकार के विनाश का कारण बन रहा है, और पॉल इसे रोकना चाहता है।

हाँ, यह संभव है। शायद यह इतना गंभीर था कि वह बलिकूल निरपेक्ष बातें बोल रहे थे। हो सकता है कि स्थिति और यह उन बंदियों में से एक है जिस पर मैं एक पल में पहुंचना चाहता हूँ जब बात आती है कि हम इस पाठ को कैसे लागू करते हैं, लेकिन यह संभव है कि समस्याओं में से एक यह है, दूसरे शब्दों में, पॉल बस यही चाहता है कि यह यहीं रुक जाए परिस्थिति।

शायद यह चर्च में इस कदर घुसपैठ कर चुका है और ऐसी समस्याएं पैदा कर रहा है कि उसका एकमात्र सहारा इसे खत्म करना ही है। इसलिए, वह काफी कड़े शब्दों में बोलते हैं। हाँ, यह हो सकता है।

हो सकता है कि जिस तरह से वह इसे संभाल रहा है वह उसके पछिले पत्रों में स्थितियों को संभालने के तरीके में अंतर को प्रतिबिंबित कर सकता है। लेकिन क्या हर कोई इसे देखता है, ऐसा प्रतीत होता है कि पॉल एक बहुत ही विशिष्ट समस्या, झूठी शक्ति के साथ-साथ

इस नए रोमन महिला वचिार का जवाब दे रहा है जिससे बुतपरसुत दारशनकि और समाज के अनय लोग भी खुश नही है ? अब यह चरच में प्रवेश कर गया है, और कम से कम कुछ महिलाएँ इससे प्रभावति हुई है, और अब पॉल इस पर रोक लगाने की कोशशि कर रहा है, क्योंकि यह वशिष रूप से चरच में प्रकट हो रहा है क्योंकि यह पूजा के लिए इकट्ठा होता है, जहाँ महिलाएँ ऐसे कपडे पहनती हैं यह नई रोमन महिला और समाज की परंपरा का उललंघन करती है, उततेजक तरीके से कपडे पहनती है, अपने साथियों के प्रता विवाह का अनादर करती है, और पॉल चाहता है कि यह बंद हो।

तो, वह कहते हैं, ऐसे कपडे मत पहनो, और, आप जानती हो, अपने पतयियों को कोई शकिषा नही देना और उन पर अधिकार रखना उनके प्रता आपके अनादर का संकेत नही है। सवाल यह है कि क्या पॉल अनय स्थतियों में अनय चरचों के समान ही कुछ कहेंगे। हाँ, इसकी तुलना 1 कुरनिथियों 11 से कैसे की जाती है, जहाँ उसने उनहें दलिचसप ढंग से, 1 कुरनिथियों अधयाय 11 से संबधति नरिदेश दिए, जहाँ पॉल पूजा की स्थति को संबोधति कर रहा है, वह वास्तव में एक खंड देता है जिसके बारे में हमने बात नही की, क्योंकि मैं जानता था हम इस पुस्तक में इसके बारे में बात करेंगे, 1 तीमुथायिस में, पॉल पूजा के संदर्भ में पतयियों और पतनयियों के बीच संबधों के मुद्दे को भी संबोधति करता है।

अब उस पर आगे बढ़ते हुए, यहां मुख्य बहस है, और मैं इसे सुलझाना नही चाहता, मेरा इरादा इसे नपिटाने का उतना नही है जतिना कि आपको इस मुद्दे को देखने के लिए प्रेरति करना है। मुख्य बहस यह है कि क्या अधयाय 2 में पॉल के नरिदेश सारवभौमकि रूप से बांधयकारी हैं, यानी कि क्या पॉल ने पहली सदी या 21वीं सदी के किसी भी चरच के बारे में कुछ ऐसा ही कहा होगा। दूसरे शब्दों में, क्या चरच में महिलाओं के न पढाने और पुरुषों पर अधिकार रखने के संबध में अधयाय 2 में पॉल के नरिदेश आज के लिए बांधयकारी हैं? क्या यह सारवभौमकि है, या यह अधिक सांसकृतकि और सीमति है? क्या पॉल ने इन नरिदेशों का इरादा केवल इफसिस के पहली सदी के चरच के लिए किया था और जरूरी नही कि किसी और के लिए भी हो? इसलिए, किसी अनय संदर्भ में, पॉल महिलाओं को पढाने और उपदेश देने और पुरुषों पर अधिकार रखने आदि से खुश था।

लेकनि इफसिस में, वह नही था। या फरि, क्या यह पॉल की किसी चरच की इच्छा थी? हम शुक्रवार को इसके बारे में अधिक बात करेंगे।

यह न्यू टेस्टामेंट हसिट्री एंड लटिरेचर में डॉ. डेव मैथ्यूसन, थसिसलुनकिथियों, टमिोथी और टाइटस पर व्याख्यान 25 था।